International Journal of Applied Research 2020; 6(10): 331-332

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2020; 6(10): 331-332
www.allresearchjournal.com
Received: 09-07-2020
Accepted: 17-08-2020

पुतुल कुमारी
शोधार्थी, (मैथिली विभाग) ल.ना.मि. वि., दरभंगा ग्रा. पो. – भटसिमर, थाना – राजनगर, जिला– मधुबनी, बिहार, भारत

Corresponding Author:
पुतुल कुमारी
शोधार्थी, (मैथिली विभाग) ल.ना.मि. वि., दरभंगा ग्रा. पो. – भटसिमर, थाना – राजनगर, जिला– मधुबनी, बिहार, भारत

वर्तमान दशकक मैथिली कथा : संवेदनाक ह्रास

पुतुल कुमारी

सारांश
भूमंडलीकृत आजुक वैश्विक व्यवस्थामे बाजारवादक प्रसारकेँ मनुक्ख मात्रक सुभ्यस्ततताक मास्टर–की (उंजमतदृ ामल) मानल जा रहल अछि। फलस्वरूप आइ बाजार नगरक चौराहा आ गामक चौबटियासँ घर–अंगना धरि सन्हिया चुकल अछि। निश्चितरूपसँ एकर किछु सकारात्मक आर्थिक प्रभाव समाज पर अवस्स पड़ल अछि मुदा बाजारवादक उपोत्पादक रूपमे जाहि उपभोक्तावादी संस्कृतिक जन्म भेल अछि से मानवीय संवेदना आ नैतिकता पर पैघ सन खतरा बनल प्रतीत होइत अछि। वर्तमान दशकक कथा सभ मानवीय सम्वेदनामे आयल एहि ह्रास दिस यत्र–तत्र ईशारा करैत प्रतीत होइत अछि जकर संक्षिप्त विश्लेषण एहि निबंधक माध्यमे प्रस्तुत करबाक प्रयास कैल गेल अछि।

प्रस्तावनाः
मनुक्ख एकमात्र जीव अछि जे चिंतन, मनन आ मंथन क' सकैत अछि। मनुक्खक इएह गुण मनुक्खकेँ सभ प्राणी सँ श्रेष्ठ बनबैत अछि। चिंतन, मनन आ मंथन मनुष्यकेँ अपन भोगल अथवा अनुभूतिजन्य सत्यक प्रति साकांक्ष बनबैत अछि। अपना ऊपर घटित घटनाक प्रभावक अनुभवसँ ओ दोसरक ऊपर घटित ओहने घटनाक प्रभावक अनुमान सहज रूपेँ लगा लैत अछि। चिंतन जतेक गम्भीर होइत छैक, कोनो घटना–परिघटनाक अनुभव ओतबे तीव्र होइत छैक। अनुभव जतेक गम्भीर होइत छैक, अनुभूति ततबे प्रबल। अनभूतिक गहनता सँ दोसरक वेदना अथवा दुरूख–दर्दकेँ कँ ओहि स्तर धरि अनुभव कैल जाय लगैत छैक जाहिसँ दोसरक दुख सेहो स्वयं पर घटित होइत बुझना जाइछ। एकरे संवेदना कहल जाइत अछि। स्वभाविक रूपसँ मनुष्य एकटा संवेदनशील प्राणी थिक। मुदा संवेदनशीलताक स्तर मनुष्य जाहि परिवेश मे रहैत अछि ताहि ऊपर निर्भर करैछ । इएह कारण अछि जे एकटा अपराधी सँ बेसी संवेदनशीलता एकटा सामान्य व्यक्तिमे पाओल जाइत छैक। मनुक्खक परिवेश जेना–जेना बदलैत अछि ओकर चिंतन प्रक्रियामे सेहो बदलाओ आबय लगैत छैक। जीवन–संघर्षक स्थितिमे मनुष्य अपन सुरक्षाक लेल आत्मकेंद्रित भ' अछि। ई संघर्ष जतबे प्रबल होइछ, आत्मनिष्ठता आ स्वार्थपरता ततबे तीव्र रहैछ । मुदा प्रश्न उठैछ जीवन संघर्ष त' मनुक्खमात्रक जीवनमे रहितहि अछि। तखन तश सभकेँ आत्मकेंद्रित रहब स्वभाविके अछि । अस्तित्वक रक्षार्थ जे जीवन संघर्ष होइत छैक ताहिमे मनुक्ख सामाजिक अथवा सामूहिक रूपसँ सहभागी होइत छैक आ तेँ एक दोसरक हित सँ जुड़ल रहैत छैक आ एही सर्वनिष्ठ हितक कारण पारस्परिक प्रेम आ भाइचारा बनल रहैत छैक। मुदा जखन ई जीवन संघर्ष प्रतिस्पर्द्धाक रूप ल' अधिकाधिक संसाधनक हेतु संघर्षरत होइत छैक तखन ओ दोसरक हितक उपेक्षा करय लगैत छैक फलस्वरूप ओकरामे स्वार्थपरता जन्म लैत अछि। इएह कातण अछि जे ओ दोसरक दुख–दर्दकेँ अनठबैत आगू बढबाक हेतु अपस्यांत रहय लागैछ। ओकर इएह आत्मनिष्ठता ओकरा परिवेशसँ काटय लगैत छैक आ शनैः शनैः ओ संवेदनहीन होमय लगैत अछि। उपभोक्तावादक प्रसारक पछाति इएह प्रवृति आजुक मध्यमवर्गीय मैथिल समाजमे जगह बना चुकल अछि । समाजक निम्न आय वर्ग अथवा शोषित पीड़ित कहल जाइवला समाज आब भोजन वस्त्रक लेल चिन्तित नहि नजरि अबैछ। आब ओ राजनीतिक ओ प्रशासनिक प्रतिनिधित्वक लेल बेसी चिंतित अछि। मुदा मध्यम वर्ग एहि गरा–काट आर्थिक व्यवस्थाक प्रतिस्पर्धा मे कतहु अपन अस्तित्व बचयबाक लेल अपस्याँत अछि त' कतहु मध्यमसँ उच्च आयवर्गमे पहुँचबाक लेल व्यग्र अछि। इएह व्यग्रता ओकरा आत्मकेंद्रिता बनौने जा रहल छैक, फलस्वरूक ओकरामे संवेदनाक ह्रास भ' रहल अछि। इएह कारण छैक जे आइ सामन्य सामाजिक सरोकार के कहय, अपन जन्मदाता आ पालनकर्ता माय–बाप धरिक प्रति लोक असंवेदन भेल जा रहल अछि। वर्तमान दशकक मैथिली कथा सभमे मध्यम वर्गीय समाजक ई आत्मनिष्ठता ओ संवेदनहीनता यत्र–तत्र दृष्टिगोचर होइत अछि।
आजुक समाजमे पारस्परिक आत्मीयताक आधार निजी स्वार्थ भ' क' रहि गेल अछि। उग्रनारायण मिश्र 'कनक' क कथा ओकर सुगनाश्क बुधनी जाधरि सुभ्यस्त रहैत अछि,

लोकक मददिमे तत्पर रहैत अछि ताधरि समाज ओकर बेस प्रतिष्ठा रहैत अछि मुदा जखनहि ओकरा पर विपति अबैत अछि ओ एकसरि भ' जाइत अछि। क्यो देखनिहार नहि रहि जाइत छैक। सुखमे संग देनिहार लोक दुखक घड़ीमे दूर भ' जाइत अछि। दूरे नहि भ' जाइछ अपितु जगह जगह ओकरा कुष्ठग्रस्त पतिक तिपहियाक भारक अतिरिक्त समाजक वासनाक धधरा छाती पर सहय पड़ैत अछि। अंततोगत्वा निष्ठुर समाजक घोर उपेक्षा आ तिरस्कारक आगिमे जड़ैत एकदिन दुनू प्राणी असमय कालकवलित भ' जाइछ। डॉ वीणा ठाकुरक 'परीणिता' कथा संग्रहक अधिकांश कथा प्रायः क्षीण होइत मानवीय संवेदनाक यथार्थ–बोध पर आधारित अछि। एहि संग्रहक लेखकीयमे कथाकार कहितहु छथि– ''पहिने पैघ घर, पैघ दलान, पैघ संसार आ पैघ पैघ वस्तु छल मुदा एखन घर– आंगन सोच–विचार सभटा छोट भेल जा रहल अछि। लगैत अछि जेना मनुष्यक मोन सेहो छोट भेल जा रहल अछि। ओकर प्रेम करबाक क्षमता श्स्वश मे केन्द्रित भ' आबद्ध भ' गेल अछि।''[1] सत्यो इएह अछि। आजुक लोक अपनहि बनाओल इच्छा–आकांक्षाक पिंजरा मे तेनाकेँ सीमित भ' गेल अछि जे ओकरा दोसराक भावनाकेँ बुझबा–समझबा वा आदर करबाक पलखतिए कहाँ छैक ? सम्बन्ध–बन्ध पर्यंतकेँ लोक आइ केवल अवसर जकाँ प्रयोग रहल अछि। त्यागक बदलामे प्रति–त्याग, उपकारक बदलामे प्रति–उपकार आदरक बदलामे आदर आदिक अपेक्षा राखब व्यर्थ थिक। श्परीणिताश कथाक श्यामा अपन जाहि भाइ, बहिन, माय, प्रेमी ककरा लेल त्याग करबामे पाछू होइत छथि ? सभ सम्बन्धक प्रति अपन कर्तव्य आ दायित्वक सम्यक् निर्वहन करैत छथि। मुदा प्राप्त करैत छथि केवल आ केवल उपेक्षा, तिरस्कार आ एकाकी जीवनक त्रासदी। इएह स्थिति 'विदाइ' कथाक मोहन बाबू आ हुनक पत्नीक होइत छन्हि। समुच्चा जिन्दगी ईमानदारी, अनुशासन आ कर्तव्यनिष्ठासँ जीबैत सोचने छलाह जे नोकरीसँ रिटायरमेंटक बाद आर्थिक रूपसँ आत्मनिर्भर पुत्र अशोक घरक दायित्व सम्हारि लेताह। शेष जीवन दुनू प्राणी निश्चिन्त भ' काटि लेताह। मुदा होइत अछि उनटा । अशोकक उपेक्षा तिरस्कार आ संवेदनहीनता कैँ रूग्ण हृदयी मोहन बाबू सहन नहि कश पबैत छथि आ एक राति सुतबाक लेल जे आँखि मूनैत छथि तश फेर कहियो खोलैत नहि छथि। डॉ ठाकुर सत्ये कहैत छथि छोट केवल घर–आंगन, दलान–दरवज्जेटा नहि भेल अछि, असलमे छोट भेल जा रहल अछि मनुक्खक सोच। डॉ शेफालिका वर्मा अपन कथा श्एपार्टमेंटी संस्कृतिमे सेहो नगरीय जीवनक संकुचित चास–वासमे संकुचित होइत मानवीय संवेदनाक यथार्थ चित्र उकेरलनि अछि। अढाइ कोठलीक अपार्टमेंटी फ्लैटमे सभकिछुक लेल जगह छैक। किट्टी–पार्टी मनाओल जा सकैत छैक। मुदा वृद्ध मायक हेतु जगह नहि छैक। अपन रक्त–कण सँ बनल दूध पिया बेटाकेँ एकटा सुभ्यस्त जीवन देनिहारि मायक लेल जीवनक सांध्यकालमे बेटा पुतहुक संग बितेनाइ एकटा विवशता सन किएक प्रतीत होइत छैक ? एहि प्रश्नक संग डॉ वर्मा संवेदना विहीन होइत आत्मकेंद्रित परिवारक यथार्थ कथा प्रस्तुत करैत छथि।

बाजारवादक प्रचंड विरोंक परिधिमे आबि मानवीय संवेदनाकेँ जे क्षति उठबय पड़ि रहल अछि तकर दुष्प्रभावस्वरूप पारस्परिक संबंध धरिक प्रासांगिकता ओकर विपणन क्षमतासँ तय होमय लागल अछि। इएह कारण अछि जे वर्तमान नव पीढीक लेल संबंधक प्रति सहज ममत्व ओ प्रेमक लेल पर्याप्त जगह नहि बाँचल अछि। एकर विपरीत पारस्परिक संबंधक महत्व ओकर आर्थिक उपादेयता पर निर्भर करय लागल अछि। शिवशंकर श्रीनिवासजीक कथा–संग्रह श्गुणकथश्क प्रतिनिधि कथामे एहि तथ्यक स्थापना निम्नलिखित कथांशमे कैल गेल अछि।

"पापा एखन सभ किछु बिकाइ छै। अहाँ हिनक बेटा छी, ताहिसँ अहाँक कम्पनीक मार्केट बढि जायत। एहि दिशा मे थोड़े काज करू बस।'' [2]

आत्मकेन्द्रनक एहि दौर मे मानवीय आपकता, सामाजिकतादिमे संवेदनशीलताक लेल कोनो जगह नहि रहि गेल अछि। हिन्दी सिनेमाक ई गीत 'अपना काम है बनता तो भाँड मे जाए जनता' आजुक युग–धर्म जकाँ बुझना जा रहल अछि। शुभेन्दु शेखरक कथा श्बौआ ठीक छथिश आजुक समाजक एहि यथार्थक सुन्दर उपाख्यान गढैत अछि। एहि कथाक नायक रूद्रनाथ काकाक बालक दिल्लीमे रहि प्रतियोगिता परीक्षाक तैयारी करैत अछि। एकदिन टीभी पर न्यूज अबैत छैक जे दिल्लीमे आतंकवादी द्वारा बम विस्फोट कैल गेल अछि जाहिमे किछु लोक हताहत भेल अछि। रूद्रनाथ काका कोनो अनिष्टक आशंकासँ पुत्रक समाचार बुझबाक लेल व्यग्र भ' जाइत छथि। बेटा सँ फोनसँ सम्पर्क साधबाक क्रममे किछु समय धरि असफल रहैत छथि जे हुनक व्यग्रताकेँ बढा दैत छन्हि। अंततोगत्वा बेटा सँ संपर्क होइत छन्हि आ बेटा सकुशल छन्हि से जानि मोन शांत भ' जाइत छन्हि। ओही शहरमे हुनक बहिन बेटा सेहो रहैत छन्हि। मुदा, तकर सुधि लेब ओ आवश्यक नहि बुझैत छथि। दोसर पुत्र सुमनजी काकाकेँ पीसीक बेटाक कुशल –क्षेम पुछि लेबाक हेतु पितासँ जिद्द करैत छथि मुदा रूद्रनाथ काका मोबाइलक पैसा खर्च होयबाक भयसँ एहि बातकेँ टारैत चादरसँ मुँह झाँपि जबाव दैत छथि– ''गाँ... मराबे दुनिया आ रूद्रनाथ झा बजाबथि हरमुनियाँ।'' [3]

नैतिकताक क्षरणक एहि कलिकालमे स्वार्थलोलुपताक ग्राफ तीव्र गतिए बढि रहल अछि। स्वार्थलोलुपता मानवीय चेतनाकेँ नकारात्मक प्रवृति दिसि धकेलि रहल अछि। फलस्वरूप मनुक्ख ईर्ष्या, द्वेष, हीनताजन्य अनेक प्रकारक कुंठाक शिकार भ' अमानवीय आचरणक प्रदर्शन करय लगैत अछि ! एहि अमानवीय आचरणक नकारात्मक प्रभाव सर्वप्रथम ओकर मानवीय संवेदना पर पड़ैछ जाहि सँ ओ हृदयहीन आ निष्ठुर भ' दोसरकेँ नोकसान पर्यंत पहुँचाबय लगैछ । अपन–आनक भेद बिसरि स्वार्थ ओ कुंठाक तुष्टि ओकरा हृदयकेँ शान्ति प्रदान करैत छैक। भाइ–भाइकेँ दुश्मन बूझय लगैत छैक। धीरेन्द्रनाथ मिश्रक 'यक्ष–प्रश्न' कथा संग्रहमे संकलित कथा 'कलंक' भ्रातृत्व पर ईर्ष्या आ स्वार्थजन्य असंवेदनशीलताक एहने पारिवारिक कलंककेँ अपन एहि कथाक आधार बनौलनि अछि। स्वार्थान्धता आ ईर्ष्याक आगि एकटा आदर्श व्यक्ति आ हँसैत–खेलाइत परिवारकेँ केना भस्मीभूत होएबा पर बाध्य क' दैछ तकर निसन्न उदाहरण एहि कथामे भेटैत अछि। एहि प्रकारेँ वर्तमान दशकक अनेक मैथिली कथा सभ उपभोक्तावादक मायाजालमे चिर्रीचोथ होइत मामवीय सम्वेदना आ नैतिकताक अनेक भयावह आ यथार्थ चित्र सभ उपस्थित करैत वर्तमान सामाजिक दशा ओ दिशा पर प्रभावी टिप्पणी करैत प्रतीत होइत अछि।

निष्कर्षः

वर्तमान दशकक मैथिली कथासभ सामाजिक यथार्थक निसन्न दस्तावेज तैयार करैत मानवीय सम्वेदनामे होइत निरंतर ह्रासँ बेस चिन्तित नजरि अबैत अछि। परिवार सँ ल' क' समाज धरि, अनेक स्तर पर मानवीय व्यवहार मे आयल नकारात्मक परिवर्तन कैँ कथावस्तुक आधार बना आजुक कथाकार लोकनि व्यक्तिक आर्थिक उत्थानक संग संग ओकर नैतिक उत्थानक लेल तत्पर आ चिन्तित बुझाइत छथि। व्यक्ति अथवा समाजक सर्वांगीन उत्थान तखनहि भ' सकैछ जखन ओ आर्थिकरूपसँ सशक्त होयबाक संग–संग नैतिक आ संवेदनात्मक स्तर पर सेहो सशक्त भ' सकय। इएह कारण अछि जे वर्तमान दशकक कथा सभ पाठकक समक्ष सामाजिक यथार्थक मानवीय पक्षक संकीर्णताकेँ समेटि पाठकक समक्ष अयना रखैत अछि।

संदर्भः

1. परीणिता, ले. – प्रो. वीणा ठाकुर, पृ. सं.– 7
2. गुणकथा, ले.– शिवशंकर श्रीनिवास, पृ.– 49
3. ओकरो कहियो पाँखि हेतय, ले. – शुभेन्दु शेखर, पृ.– 39